अनसुना सफर

अनसुना सफर जो अनकहा ही रह गया...

एक दिन जब नींद खुली तो मैं हैरान था। ना ही घर पे कोई था और ना ही मोहल्ले में कोई नजर आ रहा था। यहाँ तक की ना परिवार वालो का फ़ोन लग रहा था। ना ही दोस्तों का।ना ही टीवी चल रहा था ना इंटरनेट।घर से थोड़ा दूर आया तो पता चला पुरे शहर में कोई नहीं है। सारे दुकानों में ताले जड़ें हुए थे।ऐसा लग रहा था मानो शहर में आज हड़ताल हो।मैं बहोत ज्यादा हैरान और परेशान था।घर आ कर खुद ही कुछ बना के खाना पढ़ा। जैसे तैसे रात हो गई, मगर नींद तो आज कोसों दूर थी। दूसरे दिन शहर से थोड़े दूर देख कर आने का विचार करके अपनी गाड़ी में निकला।पेट्रोल पंप में भी कोई नहीं था,थोड़ी कोशिस करने पे पेट्रोल डालना सिख गया।या यू कंहो पहले ही देखा हुआ याद आ गया।आज मेरी गाड़ी कुछ ज्यादा ही तेज रफ्तार में चल रही थी।ना कोई रोकने वाला था ना ही मना करने वाला।शहर के बाहर हाईवे में आकर मैं और परेशान हो गया, गाड़ियां तो खड़ी थी पर वो सोर कहीं गायब था।ऐसा लग रहा था मैं कोई सपना देख रहा हूँ, जिसमें सब लोग कहीं गायब हो गए हैं।बचा हुँ तो केवल मैं।शहर वापसी के बाद घर पे खाने को कुछ ना पाकर, मजबूरन मुझे एक दुकान का ताला तोड़ना पड़ा।मुझे किसी का डर नहीं था, क्योंकि सायद कोई था ही नहीं।मैंने अपनी जरुरत के सामान निकाल लिए।घर आकर पेट भर के बैठा, जब फ़ोन देखा तो नेटवर्क भी कहीं गायब था।कुछ देर फ़ोन में गेम खेल कर सो गया।सुबह उठकर शॉपिंग मॉल से खाने के

जरूरी सामान लिए,जी हाँ ताला तोड़कर।फिर घर आकर लैपटॉप में मूवी देखता रहा, क्योंकि टीवी तो चल ही नहीं रहा था।आज का दिन भी कट गया।फिर दूसरे दिन सुबह मैं डर गया।शहर के कुत्ते और बाकि जानवर भूक की वजह से खुखांर हो गए थे।उन्हें खाना देने वाला अब कोई नहीं था, मैं तो खुद चुरा कर खा रहा था। आत्मरक्षा के लिए मेरे पास सिर्फ घर के चाकू थे।ये जानवर अब डंडे का ख़ौफ नहीं खा रहे थे।मैंने पुलिस थाने जा कर हथियार उठा लिए।या यू कँहो थाने में ही चोरी कर ली।पर ये अब जरुरी हो गया था।फिर कुछ खाने के सामान निकाले।फिर मैं कपड़े भी ढूढ़ने लगा।हाँ इस वक़्त पर नए कपड़ो की जरुरत नहीं थी।पर मुझे खुशी मिल रही थी।सायद मुझे ये सब करने में अब आनंद आने लगा था।मुझे तो अब यकीन होता जा रहा था,कि इस जालिम दुनिया में मैं अकेला इंसान बचा हुँ। इन सब विचारो में डूबे हुए एक दिन और बीत गया। दूसरे दिन मैंने सोचा कि अगर मैं आखरी इंसान बचा हुँ,तो मुझे यकीनन बिजली और पानी का विकल्प ढूढ़ना पड़ेगा।खाने के लिए मैं अब भी दुकानों में पड़े खाने पर निर्भर रह सकता था।पानी के लिए बंद बोतलों का विकल्प था, पर मैं इसे बर्बाद नहीं करना चाहता था।घर की बोरवेल का लाभ जरूर मिल रहा था।बिजली के लिए मुझे टॉर्च लाइट का ही विकल्प समझ आया।तो मैंने सारे दुकानों में खोजकर टॉर्च और बैटरी जमा कर ली।अब मेरे पास अगले एक हफ्ते का खाना और पानी था।कुछ हथियार और टॉर्च और गाड़ी में पेट्रोल था।पर इतना काफ़ी नहीं था।दूसरे दिन मैंने सौर ऊर्जा से चलने वाले टॉर्च और गाड़ियां भी जमा कर ली।क्योंकि मुझे पेट्रोल का विकल्प चाहिए था।फिर अगले दिन से मुझे

समझ नहीं आ रहा था कि और क्या जरुरी चीजे हैं। इन्टरनेट भी नहीं था कि सर्च कर के मालूम चल सके। मुझे किताबों से ही ये सब सीखना था।मेरे पास ढेरों किताबें थीं।पुरा शहर किताबों से भरा था।एक इंसान के लिए ये किताबें जरूरत से ज्यादा ही थी।मुझे किताबों का कोई शौक़ तो था नहीं।पर करने को कुछ था भी नहीं अब ये जरूरी भी थी।मैंने किताबे पढ़नी शुरू की।अब मैं रोज किताबें पढ़ने लगा,और सिखने लगा।अब तो बिजली पूरी तरह जा चुकी थी।अब मुझे पुरा यकीन हो गया कि इस दुनिया में सिर्फ मैं हुँ।रोज मुझे आत्मरक्षा के लिये कई सारे जानवरों को मारना पड़ता था।पहले थे मुझे हथियार चलाने में भी परेशानी हुई, निशाना सही नहीं बैठता था।कुछ दिनों में मैं ये भी सीख गया।मैंने दूसरे शहरों से भी खाना और हथियार ला लिए।इंसानों के ना होने की वजह से जंगली जानवर भी शहर की तरफ आने लगे।घरो और गाड़ियों में भी पेड़ पौधे उगने लगे थे।मेरी गाड़ी में हवा नहीं थी,और हवा भरना कभी सीखा नहीं।मजबूरी में अब मेरे पास सायकल का ही सहारा था।खतरा इतना बढ़ चुका था की घर से बाहर निकलने को सोचना पड़ता था।मैं सुबह सो कर दिन में खाना इकट्ठा करता और रात में टॉर्च जला कर किताबें पढ़ता।साथ ही मैने डायरी भी लिखनी शुरू कर दी।हाँ ये किताब उसी डायरी का हिस्सा है।अब यही दिनचर्या बन गई थी।अकेले रहने की वजह से तनाव बढ़ता जा रहा था।अब मुझे अपना ईलाज भी खुद ही करना था।मुझे दवाईयों की थोड़ी बहोत समझ थी, जो मेरे बहोत काम आ रही थी।इंसानों ने इस दुनिया को इतना खराब कर दिया था।अब वह अपने आप को सुधार रही थी। आसमान में मुझे अंगिनत तारे नजर आने लगे थे।कुछ

तो रंगीन भी थे।हाँ मैं खुशकिस्मत था।पर इस खुशी को मेरे साथ बाँटने वाला कोई नहीं था।कुछ दिन के बाद शहर के घर गिरने लगे थे।बड़े-बड़े बाँध टुटने की वजह से कई शहर पानी में तैर रहे थे। मुझे नए और मजबुत घर की तलाश करनी थी।वो भी जानवरों से अपनी जान बचाते हुए।मौसम मुझे हर दिन अपना नया और खतरनाक रूप दिखा रहा था।कुछ दिनों के बाद तो मुझे सांस लेने में भी तकलीफ़ होने लगी।हाँ ये परमाणु ऊर्जा प्लांट की वजह से था।जो देखरेख के अभाव में ज़हरीली गैसे उगल रहा था।मास्क पहनने के बावजूद मेरा साँस लेना मुश्किल होता जा रहा था।हाँ इसमें उन जानवरों के मौत की बदबु शामिल थी।जिसे मैने आत्मरक्षा में मारा था या किसी जंगली जानवर ने अपना भोजन बनाया था।नए घर की तलाश में मैं कई शहर पार कर चुका था। लेकिन सब जगह के हालात एक जैसे थे।फिर एक दिन अचानक आसमान से कुछ गिरा।जोर की आवाज हुई। हाँ वो एक सेटेलाइट था।वो मुझसे तीन मिल दूर गिरा था।अब ये सिलसिला तेज होता जा रहा था।रोज एक-दो सेटेलाइट का गिरना आम हो गया था।वो तो ऊपर वाला जाने मैं कैसे जिंदा था।एक दिन मेरी साँस घुटने लगी।हाँ वो मेरा आखरी दिन था।अब मैं दुनियाँ का।वो आखरी बचा इंसान भी अपनी जंग हार गया।ना मेरी मौत पे रोने वाला कोई था।ना मैं जान पाया की वाकई में मैं वो आखरी इंसान था या नहीं...

नाम-मो. आफताब कुरैशी
पता-समता कुजं गली, शिवाजी चौक, संतोषी नगर, रायपुर(छ. ग.)
ईमेल-aftabquereshi98765@gmail.com
मोबाईल नं.-9644610201